वक्तव्य: 07 (उपरूपक)

उपरूपक

नाटिका त्रोटकं गोष्ठी सट्टकं नाट्यरासकम् ।

प्रस्थानोल्लाप्यकाव्यानि प्रेङ्खणं रासकं तथा ॥

संलापकं श्रीगदितं शिल्पकं च विलासिका ।

दुर्मल्लिक प्रकरणी हल्लीशो भाणिकेति च ॥

अष्टादश प्राहुरूपरूपकाणि मनीषिण: ।

बिना विशेषं सर्वेषां लक्ष्म नाटकवन्मतम् ॥[14]

अर्थात् उपरूपक 18 हैं। इन सभी का सामान्य स्वरूप वही है, जो नाटक नामक प्रथम रूपक-प्रकार का है। ये हैं –

1. नाटिका
2. त्रोटक
3. गोष्ठी
4. सट्टक
5. नाट्यरासक
6. प्रस्थान
7. उल्लाप्य
8. काव्य
9. प्रेङ्खण
10. रासक
11. सम्लापक

---

[14] साहित्यदर्पण 6/4-6

12. श्रीगदित
13. शिल्पक
14. विलासिका
15. दुर्मल्लिका
16. प्रकरणी
17. हल्लीशक
18. भाणिका

१-नाटिका :-वृज कविकल्पित । स्त्री चरित अधिक । प्रख्यात राजवंश का धीरललित राजा नायक । चार अङ्क । नायिका अन्त:पुर से सम्बन्धित अथवा संगीतविशारद अथवा राजकुलोत्पन्न । नायक-नायिक का मिलन । **उदाहरण – रत्नावली (हर्ष), विद्धशालभाञ्जिका (रजशेखर)**

२-त्रोटक :- 5,7,8 या अधिकतम 9 अंक । देव व मानव दोनों का मिश्रण । प्रत्येक अङ्क में विदूषक उपस्थित । **उदाहरण –विक्रमोर्वशीयम् (5 अंक-कालिदस) तथा स्ताम्भितरम्भ ।**

३-गोष्ठी :- 9-10 साधारण पुरूषों का चरित्र वर्णन । कैशिकी वृत्ति प्रधान ।5-6 स्त्री पात्र । एक अंक । काम श्रृङ्गार । गर्भ व विमर्श सन्धि का अभाव । **उदाहरण – रैवतमदनिका ।**

४-सट्टक :- इसकी रचना आरम्भ से लेकर अन्त तक प्राकृत में होती है प्रवेशक-विषकम्भक का अभाव । अङ्गी रस "अद्भूत" । अङ्कों का नाम जवनिका । **उदा०- कर्पूरमञ्जरी (राजशेखर)**

५-नाट्यरासक :- एक अङ्क ।लय व ताल का महत्व । उदाज प्रकृति का नायक । पीठमर्द नायक भी । श्रृङ्गार के साथ हास्य रस की भी प्रधानता वासकसज्जा नायिका । मुख व निर्वहण सन्धियाँ । लास्याङ्ग । **उदा०- नर्मवती व विलासवती ।**

६-प्रस्थानक :- भृत्य नायक रूप में चित्रित । दासी नायिका । मदिरा-विनोद के वर्णन के साथ विष्यसमाप्ति । सङ्गीत का पुट । दो अङ्क । **उदा०- श्रृङ्गारतिलकम् ।**

७-उलाप्य ;- उदाज प्रकृति का नायक, देव सम्बन्धी वृत्त ।एक अङ्क ।श्रृङ्गार, हास्य व करूण रस प्रधान । संग्राम के वर्णन तथा अस्त्रगीत के गायन का सहारा । **उदा०- देवीमहादेवम् ।**

८-काव्य :- हास्य रस प्रधान । आरभटिअ के ईतर वृत्तियाँ आवश्यक । नायक-नायिका का उदाज चित्रण । श्रृङ्गार के प्रकाशक छन्दों का प्रयोग । एक अङ्क । **उदा० यादवोदयम् ।**

९-प्रेङ्खण/प्रेक्षणक :- नीच प्रकृति का नायक चित्रित। गर्भ व विमर्श की आवश्यकता नहीं। सूत्रधार, विष्कम्भक व प्रवेशक का अभाव। द्वन्द्युद्ध व सरोष भाषण आवश्यक। नेपथ्य में नान्दी गायन।

उदा०- वालिवधः।

१०- रासक :- पाँच पात्र। मुख एवं निर्वहण सन्धियाँ। भाषा एवं विभाषा का प्रयोग। सूत्रधार नहीं। भारती व कैशिकी वृत्तियाँ। एक अङ्क। वीथी के सभी अङ्कों की योजना। नृत्य-गीतादि कलाओं का पुट। नान्दी श्लिष्ट अलंकारमें। नायिका रमणी व नायक मूर्ख। **उदा०- मेनकाहितम्।**

११-संलापक :-3-4 अंक।पाषण्डी नायक। श्रृङ्गार व करुण को छोड़कर कोई भी रस अङ्गीरस। नगरोपरोध, छल, संग्राम, भ्रम-संभ्रम आदि का वर्णन। **उदा०- मायाकापालिकम्।**

१२-श्रीगदुत :- कथा प्रख्यात तहा एकाङ्क। धीरोदात्त प्रकृति का नायक। नायिका प्रख्यात। भारती-वृत्ति का बाहुल्य। श्री शब्द की बहुलता। **उदा० क्रिडारसातलम्।**

१३-शिल्पक :-4 अङ्क तथा 4 वृत्तियाँ। शान्त व हास्य को छोड़कर अन्य रस प्रधान। नायक ब्राह्मण तथा उपनायक अधम पात्र। शम्शान आदि का वर्णन। इसके 27 अङ्क है। **उदा०- कनकावतीमाधवः।**

१४-विलासीका :- एकाङ्क तथा श्रृङ्गार प्रधान। लास्याङ्ग। विदूषक,विट व प्ठ्मर्द का चित्रिण। अधम प्रकृति का नायक। वेशभूषा पर ध्यान। **उदा०-**

१५-दुर्मल्लिका :- चार अङ्क। कैशिकी व भारती वृत्ति का उपनिबन्धन तथा गर्भ सन्धि का अभाव। कला-कुशल पात्र, नायक नीच प्रकृति का व्यक्ति। **उदा०- बिन्दुमती।**

१६-प्रकरणिका :- नायक के रूप में सार्थवाह (सेठ) व नायिका के रूप में उसकी सजातीय स्त्री से युक्त नाटिका ही प्रकरणिका कहलाती है।

१७-हल्लीश :- एकाङ्क। 7-8-10 स्त्रीपात्र। उदाजवाणी वाला नायक। कैशिकी वृत्ति बाहुल्य। राग, ताल व लय का प्राचुर्य। मुख व निर्वहण दो सन्धियाँ। **उदा०- केलिरैवतकम्।**

१८-भाणिका :- सुन्दर नेपथ्यरचना। मुख व निर्वहण संधियाँ। कैशिकी व भारती वृत्तियों की योजना। एकाङ्क। नायिका उदाज प्रकृति की रमणी तथा नायक नीच वंश का व्यक्ति होता है। **उदा०- कामदत्ता।**

महानाटक

एतदेव यदा सर्वैः पताकास्थानकैर्युक्तम् ।

अङ्कैश्च दशभिर्धीरा महानाटकमूचिरे ॥[15]

विश्वनाथ का मत है कि वह नाटक महानाटक कहलाता है, जिसमें 14 प्रकार के पताका स्थान की योजना है । तथा जिसका वस्तु चरित वर्णन 10 अङ्कों में किया गया हो ।

राजशेखर का “बालरामायण” महानायक का उदाहरण है ।

(पाठ्य संकलनकर्त्ता: डॉ. विकास सिंह, संस्कृत विभागाध्यक्ष, मारवाड़ी कॉलेज, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार)

रूपक तथा उसके भेद

[15] साहित्यदर्पण ,6.222-23.1/2